नाटक हयवदन (पेज–95–96)
गिरीश कारनाड

गद्य (स्त्री)

पद्मिनी : आ, बेटे। तूने अभी घने जंगल का जादू–मेला नहीं देखा न ? चल, दिखा लाती हूँ। वहाँ की बात क्या बताऊँ, बेटे! सूरज निकलने के भी पहले पेड़ों की टहनियाँ धरती पर अल्पना रचती हैं, तारे आरती उतारते हैं। तब दिन निकलता है और तमाश शुरू हो जाता है। फिर दिन–भर नाच–नाच–नाच। बन्दरों की बाजीगरी, कुक्कुटों की लड़ाई। मोरों का नाच। धारीदार शेरों का नाच। और नदी–तल पर नन्हें पाँवों में चाँदी की पायले पहने सूरज का नाच। घने जंगल के बीचोबीच संकेश्वर फूल का रथ सजा है। सोने का रथ है बेटे, जिसे झुंड–के–झुंड खींचते हैं, अनगिनत पलाश वृक्ष लाल मशाल थामें बन्दगी करते हैं। फिर धीरे से रात घिरेगी, मुन्ने को निंदिया आवेगी, और बस, एक ही फूँक में चाँद बुझ जाएगा। पर लौटने के पहले एक काम और। वहीं पास, मेले से बाहर एक कोने में, सुहाग के फूल का पेड़ खड़ा हैं पुराना पेड़ है, हमारा गहरा बन्धु। बड़ा प्यारा है। हम उससे बातें करेंगे, नमस्ते कहेंगे। ठीक है न, बेटे? अब चलो।

नाटक–आगा हश्र काश्मीरी के चुनिंदा ड्रामें (महल–एक–मुमताज़)

(पेज–583)

मुमताज़ ' व्हाट इज दिस नॉनसेंस ? ये मर्द तो हमें कुछ ख़्याल में नहीं लाते। हम औरतों को पांव की जूती के बराबर समझते हें, घर में झाड़ू हम दें, बर्तन हम साफ़ करें, रोटी हम पकावें, बच्चे हम पालें, गर्ज़ कि तमाम घर का काम तो हम करें और ज़रा कहीं बाहर सैर करने या तफ़रीह करने को जावें तो क्यों गई? खिड़की में से क्यों झांकी ? उसे क्यों देखा, उससे क्यों आंख मिलाई ? मगर शुक्र है के पहले सी अब बेवकूफ़ नहीं हूं, कुछ अंग्रेज़ी पढ़ने लिखने से कुछ मिस ख़ैरसल्ला की सोहबत में रहने से आठों–गाँठ कमीत हो गई हूँ। अब मियां की एक नहीं मानती हूं। अगर कुछ कहते हैं तो एक–एक की दस सुनाती हूं। घरदारी का काम नहीं करती हूं।

गाना : घरदारी संसारी नारी क्या जानूं। कैसों है पायो भांवरवा,
ऐसो रह के टोके मोको पहड़वा, वा से जरे मोरा जिगरवा,
घुड़की–घुड़की झिड़की नित–नित जर–जर मोरा जियरा,
काट–काट मोहे क़ैद घरवा, रोकत मोरा जिगरवा
धरवारी.....

स्त्री हेतु

पुस्तक–मुक्तिबोध (पेज–49–50)
दादी माई (विजेन्द्र) कवि

कौन जान सकै है
कित्ती पीर छिपी है मन के भीतर
फिर भाव छिपाने को बोली
ई खन भयौ तुम कूँ देर भई होयगी
आप भले हैं, सुन लेते हैं हम जैसों की
किन कूँ कहाँ टैम है
खोए है सगु अपने–अपने में
आपकी बेटी छुटकी तो रानी है
रोज पिलाती पानी मुझ कूँ
ये पालौं काट रही हूँ
देखूँ मुडी, भुक्ती, चितकबरी
इत–उत कूँ सरक गई हैं
ये तो सब माया है ईसुर की
करम खोरि टारै नाथ टरै, बाबू जी–
लिखा–बदा होके ही रहता है
लेकिन इतने पापड़ बेल चुकी हूँ
भौत भरोसौ है अपने ऊपर
मौत भी डर मानैं है मौं सूँ
जब तलक जीनौ है
ये आँच पिऊँगी
लेकिन सिर नीचा कर
नहीं रहूँगी
नहीं रहूँगी